आर्थिक समीक्षा 2022-23

मुख्य विशेषताएं

प्रस्तावना

आर्थिक समीक्षा में **भारत के विकास पथ का एक व्यापक विश्लेषण** प्रस्तुत किया जाता है। इसमें हमारे राष्ट्र के प्रति वैश्विक आशावाद को दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त, इसमें अवसंरचना पर ध्यान देने के साथ ही कृषि एवं उद्योग जैसे क्षेत्रकों में विकास और भविष्योन्मुखी क्षेत्रकों पर भी बल दिया गया है। इसे **केंद्रीय बजट से एक दिन पहले पेश** किया जाता है।

आर्थिक समीक्षा 2022–23 में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि अर्थव्यवस्था में अस्थायी झटकों के कारण सरकार द्वारा लागू किए गए रूपांतकारी सुधारों के सकारात्मक परिणाम देरी से ही सही लेकिन अब दिखने लगे हैं। हालांकि, **वर्तमान दशक में मध्यम अवधि का एक मज़बूत संवृद्धि पैटर्न दिख रहा है।** इसके चलते संभवना है कि महामारी जनित वैश्विक झटकों और 2022 में वस्तुओं की कीमतों में हुई बढ़ोतरी में एक बार सुधार होने के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था आगामी दशक में तेजी से आगे बढ़ेगी।

आर्थिक समीक्षा को तैयार किया गया है

वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग (DEA) के आर्थिक प्रभाग (Economic Division) द्वारा

मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA) के मार्गदर्शन में

अध्याय 1: अर्थव्यवस्था की स्थिति – पूर्ण सुधार (State of the Economy: Recovery Complete)

- **सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की वृद्धि दर:** वित्त वर्ष 2023–24 के लिए GDP की वृद्धि दर के 6 प्रतिशत से 6.8 प्रतिशत के बीच रहने का अनुमान है। हालांकि, यह वृद्धि दर वैश्विक स्तर पर आर्थिक और राजनीतिक विकास की गति पर निर्भर करेगी।
  - **भारत, क्रय शक्ति समता (Purchasing Power Parity: PPP)** के मामले में दुनिया की **तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** है और बाजार विनिमय दरों के संदर्भ में 5वीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है।

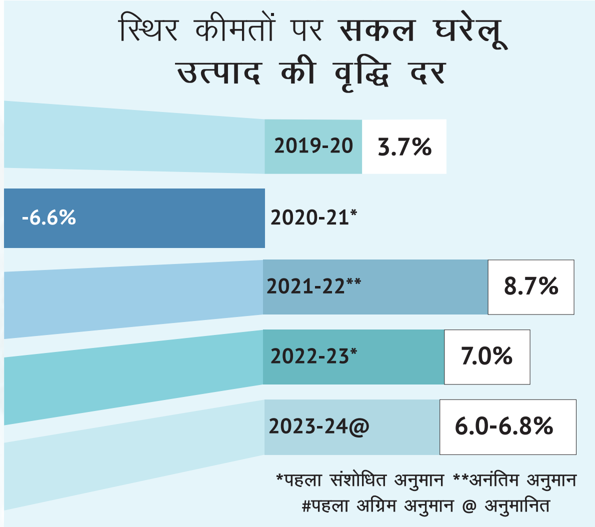

- **संवृद्धि के चालक:**
  - **निजी खपत:** वित्त वर्ष 2022–23 की पहली छमाही में निजी खपत वित्त वर्ष 2014–15 के बाद से सबसे अधिक रही है। इससे **उत्पादन गतिविधि को बढ़ावा मिला है, जिसके परिणामस्वरूप सभी क्षेत्रकों में पहले से मौजूद क्षमता का और बेहतर उपयोग हुआ है।**
  - **पूंजीगत व्यय (Capex/कैपेक्स):**
    - वित्त वर्ष 2022–23 के पहले 8 महीनों के दौरान **केंद्र सरकार का कैपेक्स 63.4% बढ़ा है।**
    - कॉर्पोरेट बैलेंस शीट के बेहतर होने और ऋण के वित्त–पोषण में वृद्धि के कारण **निजी कैपेक्स** में बढ़ोतरी हुई है।
    - कैपेक्स के व्यापक प्रभाव के परिणामस्वरूप देश के **आर्थिक उत्पादन** में पूंजीगत व्यय की तुलना में **कम–से–कम 4 गुना वृद्धि होगी।**

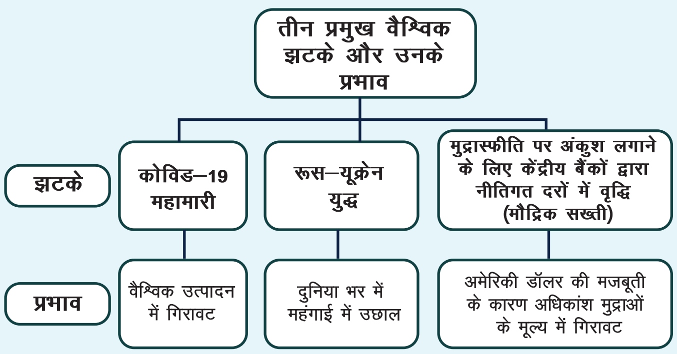

- **पिछले दो बजटों में निम्नलिखित के माध्यम से कैपेक्स को बढ़ावा दिया गया है:**
  - **कैपेक्स बजट में वृद्धि** और इसके व्यय की उच्च दर;
  - **प्रत्यक्ष कर संग्रह और GST संग्रह में अत्यधिक वृद्धि** (राष्ट्रीय आय या उत्पादन में वृद्धि के कारण कर राजस्व में भी आनुपातिक वृद्धि हुई है); और
  - **निजी निवेश में वृद्धि।**
- **रोजगार के स्तर में वृद्धि और श्रम बल भागीदारी दर (LFPR) में सुधार:** शहरी बेरोजगारी दर में गिरावट और कर्मचारी भविष्य निधि में निवल पंजीकरण में तेज़ी जैसे संकेत दर्शाते हैं कि रोजगार सृजन में वृद्धि हुई है।
  - **सितंबर 2022 में शहरी बेरोजगारी दर 7.2%** पर थी, जो चार वर्षों का निम्नतम स्तर है।
  - **2020–21 (ग्रामीण + शहरी) में LFPR** लगभग 41.6% थी, जबकि उसके पिछले वर्ष यह 40.1% थी।
- **MSMEs को ऋण में बढ़ोतरी:** जनवरी–नवंबर 2022 के दौरान औसतन 30.6% से अधिक बढ़ोतरी हुई है।

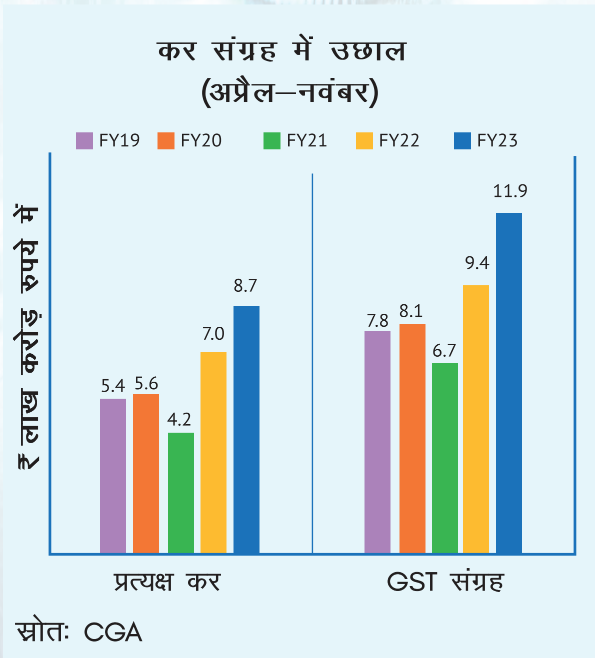

- **खुदरा मुद्रास्फीतिः** खुदरा मुद्रास्फीति दस महीनों के बाद नवंबर 2022 में फिर से वापस RBI की लक्ष्य सीमा (लचीले मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण फ्रेमवर्क के तहत 2% – 6%) के अंदर आ गई।
- **भारतीय रुपये का प्रदर्शनः** भारतीय रुपये ने अप्रैल–दिसंबर 2022 में अन्य उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अच्छा प्रदर्शन किया है।
- **आउटलुक 2023–24:** पब्लिक डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के विस्तार और विनिर्माण उत्पादन को बढ़ावा देने वाले उपायों से आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा मिलेगा।

शब्दावली को जानें

- **क्रय शक्ति समता (PPP):** इसका आशय अलग–अलग देशों में एक ही वस्तु के लिए उनकी मुद्राओं की क्रय शक्ति से है। इससे देशों के बीच एक ही वस्तु के मूल्य में अंतर का पता लगाया जाता है और फिर मुद्राओं की क्रय शक्ति की गणना की जाती है। इस प्रकार, जब दो देशों के मुद्राओं की क्रय शक्ति समान होती है तो उनके बीच विनिमय दर भी समान स्थिति में होती है।
- **पूंजीगत व्यय/ कैपेक्स (Capital expenditure: Capex):** ये सरकार के ऐसे व्यय होते हैं जिनके परिणामस्वरूप भौतिक या वित्तीय संपत्तियों का निर्माण होता है या वित्तीय देनदारियों में कमी आती है।
    - इसमें अग्रलिखित मदों पर किए गए व्यय शामिल हैं– **भूमि, भवन, मशीनरी, उपकरण आदि की खरीद, शेयरों में निवेश पर किए गए व्यय तथा केंद्र सरकार द्वारा राज्य और केंद्र शासित प्रदेश की सरकारों, सार्वजनिक क्षेत्रक के उपक्रमों (PSUs) एवं अन्य पक्षकरों को दिए गए ऋण व अग्रिम।**
- **श्रम बल भागीदारी दर (Labour Force Participation Rate: LFPR):** इसे जनसंख्या में श्रम बल (अर्थात् काम करने वाले या काम की तलाश वाले या काम के लिए उपलब्ध) के अंतर्गत शामिल व्यक्तियों के प्रतिशत के रूप में परिभाषित किया जाता है।

अध्याय 2: भारत का मध्यावधि विकास परिदृश्य – आशापूर्ण दृष्टि और उम्मीद के साथ (India's Medium Term Growth Outlook: with Optimism and Hope)

- भारत की समृद्धि का परिदृश्य **महामारी से पहले के वर्षों की तुलना में बेहतर है। भारतीय अर्थव्यवस्था मध्यम अवधि में अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने के लिए भी तैयार है।**
- **सुधारः**
    - **संरचनात्मक और गवर्नेंस संबंधी सुधारों** ने 2014–2022 के दौरान समग्र दक्षता में वृद्धि करके अर्थव्यवस्था के आधारभूत तत्वों को मजबूत किया है।
        - ये सुधार **"सबका साथ, सबका विकास"** के दृष्टिकोण पर आधारित थे। इनके तहत कई हितधारकों के बीच साझेदारी बनाने पर जोर दिया गया था।
    - **2014 के बाद के सुधार अग्रलिखित व्यापक सिद्धांतों पर आधारित थे: सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण,** विश्वास–आधारित गवर्नेंस को अपनाना, विकास के लिए निजी क्षेत्रक के साथ सह–साझेदारी और बेहतर कृषि उत्पादकता।

नए भारत के लिए सुधार – सबका साथ सबका विकास

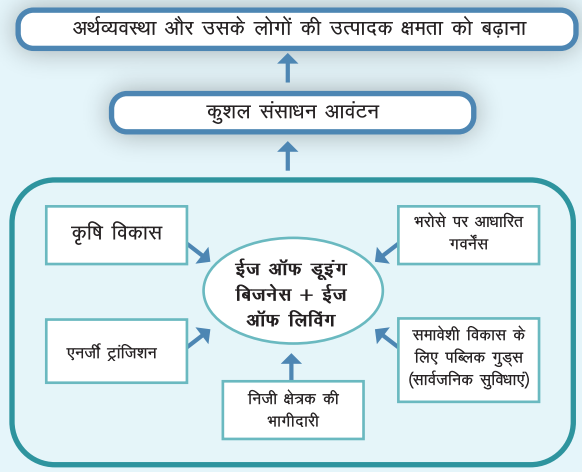

- **आर्थिक संवृद्धि पर सुधारों का सीमित प्रभावः**
    - निम्नलिखित घटनाओं के कारण ऋण प्रदान करने में वृद्धि और पूंजीगत निर्माण जैसे **प्रमुख समष्टि आर्थिक (Macroeconomic) चरों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ाः**
        - पिछले वर्षों के दौरान ऋण प्रदान करने में अत्यधिक वृद्धि के कारण **बैलेंस शीट पर बढ़ता दबाव,** और
        - **वैश्विक आघात** (महामारी और वस्तुओं की उच्च कीमतें)।
    - सुधारों के प्रभाव दिखने में देरी हुई है क्योंकि कुछ सुधारों के परिणाम सामने आने में समय लगता है।
    - सुधारों के सीमित प्रभाव की यह स्थिति **1998–2002 की अवधि के समान है।** इस अवधि के दौरान भी अर्थव्यवस्था में अस्थायी आघातों के कारण सरकार द्वारा किए गए रूपांतरकारी सुधारों के संवृद्धि संबंधी परिणाम देर से प्राप्त हुए थे।

        - एक बार जब इन आघातों का असर कम हुआ तो उसके बाद संरचनात्मक सुधारों ने 2003 से संवृद्धि संबंधी लाभ प्रदान करना शुरू कर दिए।

सकारात्मक संकेत और उम्मीद:

- **महामारी के वैश्विक झटके** और 2022 में वस्तुओं की कीमतों में आई तेजी के कम होते ही, **भारतीय अर्थव्यवस्था आगामी दशक में तेजी से आगे बढ़ने के लिए तैयार है।**
- बैंकिंग, गैर-बैंकिंग और कॉर्पोरेट क्षेत्रक की बेहतर एवं मजबूत बैलेंस शीट के चलते **ऋण प्रदान करने का एक नया चक्र शुरू हो चुका है।**
- **अधिक औपचारीकरण, उच्चतर वित्तीय समावेशन और डिजिटल प्रौद्योगिकी-आधारित आर्थिक सुधारों** द्वारा सृजित आर्थिक अवसरों के परिणामस्वरूप दक्षता में सुधार हुआ है। इससे अर्थव्यवस्था को फायदा मिलना शुरू हो गया है।

आने वाले दशक के लिए ग्रोथ मैग्नेट्स:

- स्वस्थ एवं पुनः पूंजीकृत बैंकिंग और कॉर्पोरेट क्षेत्रक
- डिजिटल प्रौद्योगिकी आधारित आर्थिक सुधार
- अर्थव्यवस्था के लिए आघातों की समाप्ति

शब्दावली को जानें

- **सार्वजनिक सुविधाएं (Public Goods):** ये बिना किसी भेदभाव के सभी नागरिकों के लिए उपलब्ध होती हैं। इनका उपयोग किसी भी नागरिक द्वारा बार-बार किया जा सकता है। इससे अन्य नागरिकों को प्रदान करने वाली सेवा प्रभावित नहीं होती है। अतः नागरिक आपसी प्रतिस्पर्धा के बिना इस तरह की सुविधाओं का उपयोग कर सकते हैं।
- **ऋण चक्र (Credit cycle):** यह आर्थिक विस्तार (Expansion) और संकुचन (Contraction) के आधार पर उधार लेने वालों के लिए ऋण की उपलब्धता के चरणों का वर्णन करता है।

अध्याय 3: राजकोषीय विकास – राजस्व सुधार (Fiscal Developments: Revenue Relish)

- राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit): वित्त वर्ष 2022-23 (FY23) के लिए राजकोषीय घाटे के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु सरकार सही दिशा में कार्यरत है। वित्त वर्ष 2022-23 में इसके GDP के 6.4% तक रहने का अनुमान है।
  - वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान केंद्र सरकार का वित्तीय प्रदर्शन **निम्नलिखित कारणों से लचीला बना रहा:**
    - **आर्थिक गतिविधि में सुधार,**
    - **प्रत्यक्ष करों एवं GST से राजस्व में अत्यधिक वृद्धि, और**
    - **बजट में व्यक्त यथार्थवादी अनुमान।**

पिछले कुछ वर्षों में केंद्र सरकार के घाटे की प्रवृत्ति

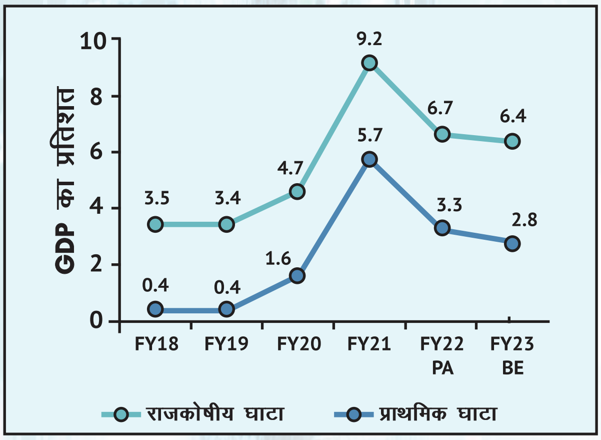

- **सकल कर राजस्व:** इसमें अप्रैल से नवंबर 2022 तक **15.5% की वृद्धि हुई है।** इसके लिए निम्नलिखित कारण उत्तरदायी थे:
  - GST, आर्थिक लेन-देन के डिजिटलीकरण जैसे संरचनात्मक सुधारों के कारण **करदाताओं की संख्या बढ़ी है।**
  - कॉर्पोरेट और व्यक्तिगत आयकर में वृद्धि के कारण **प्रत्यक्ष कर संग्रह में मजबूत वृद्धि** (वर्ष-दर-वर्ष 26% की वृद्धि) देखी गई है।
- **GST संग्रह में वृद्धि: केंद्र और राज्य सरकारों के लिए एक महत्वपूर्ण राजस्व स्रोत** के रूप में GST ने स्थिरता प्राप्त कर ली है। अप्रैल से दिसंबर 2022 तक वर्ष-दर-वर्ष सकल **GST संग्रह में 24.8% की वृद्धि हुई है।**
  - 2022 में **GST करदाताओं की संख्या दोगुनी होकर 1.4 करोड़** हो गई।
  - **निम्नलिखित के कारण GST संग्रह में सुधार हुआ है:**
    - **GST चोरों और नकली बिलों के खिलाफ चलाए गए राष्ट्रव्यापी अभियान, और**
    - **प्रणालीगत बदलाव,** जैसे- उल्टी कर संरचना को दुरुस्त करने के लिए किए गए तर्कसंगत उपाय।

केंद्र के कुल व्यय में पूंजीगत व्यय का बढ़ता हिस्सा

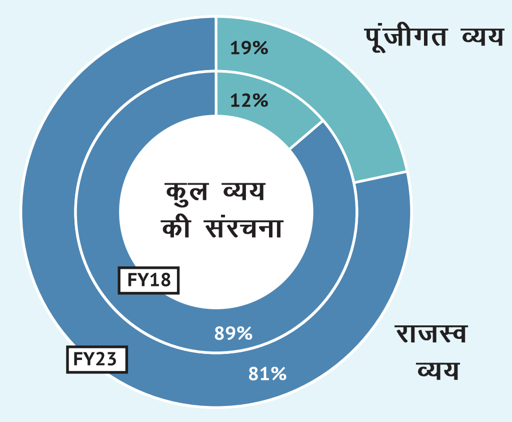

- **पूंजीगत व्यय (Capex/कैपेक्स):** केंद्र का कैपेक्स GDP के 1.7% (FY09 से FY20) से लगातार बढ़ते हुए वित्त वर्ष 2021–22 (FY22) के अनंतिम वास्तविक (Provisional Actual: PA) में 2.5% हो गया है। इसे वित्त वर्ष 2023 में बढ़ाकर **GDP के 2.9% के स्तर तक पहुंचाने** का लक्ष्य रखा गया है।
  - केंद्र ने राज्यों के कैपेक्स को बढ़ावा देने के लिए कई आर्थिक प्रोत्साहनों की घोषणा की है। इसके तहत राज्यों के लिए **लंबी अवधि के ब्याज मुक्त ऋण और कैपेक्स से जुड़े अतिरिक्त ऋण प्रदान करने संबंधी प्रावधान शामिल हैं।**
  - सड़क और राजमार्ग, रेलवे तथा आवास और शहरी कार्य जैसे **अवसंरचना गहन क्षेत्रकों** पर कैपेक्स बढ़ाने से **मध्यम अवधि की संवृद्धि पर व्यापक रूप से सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।**
  - सरकार की कैपेक्स-आधारित संवृद्धि रणनीति भारत को **अर्थव्यवस्था के विकास और ब्याज दर के बीच के अंतर को सकारात्मक** बनाए रखने में सक्षम बनाएगी। इससे मध्यम अवधि में **ऋण–GDP अनुपात को संधारणीय बनाया रखा जा सकेगा।**
- **राजस्व व्यय:** यह वित्त वर्ष 2020–21 में GDP का 15.6% था, जो घटकर वित्त वर्ष 2021–22 PA में GDP का 13.5% हो गया। यह **सब्सिडी पर किए जाने वाले व्यय में कमी** करने के कारण हुआ था।
- **राज्य सरकार का वित्त:** राज्यों का संयुक्त सकल राजकोषीय घाटा वित्त वर्ष 2020–21 में 4.1% के स्तर पर था, जो घटकर 2021–22 PA में GDP का 2.8% हो गया।
- **ऋण प्रोफ़ाइल:** केंद्र सरकार की **कुल देनदारियां** वित्त वर्ष 2020–21 में GDP के 59.2% से घटकर वित्त वर्ष 2021–22 (अनंतिम) में 56.7% हो गई।
- सरकार का सामान्य ऋण–GDP अनुपात मार्च 2020 के अंत के 75.7% से बढ़कर महामारी वर्ष के FY21 (2020–21) के **अंत में 89.6% हो गया।**

शब्दावली को जानें

- **राजकोषीय घाटा (Fiscal Deficit):** यह उधार को छोड़कर सरकार के कुल व्यय और कुल प्राप्तियों के बीच का अंतर है।
  - सकल राजकोषीय घाटा = कुल व्यय – (राजस्व प्राप्तियां + गैर–ऋण से सृजित पूंजीगत प्राप्तियां)
- **सकल कर राजस्व (Gross tax revenue):** इसमें कॉर्पोरेट टैक्स (निगम कर), आयकर, संपत्ति कर, सीमा शुल्क, केंद्रीय उत्पाद शुल्क, सेवा कर (अब GST), केंद्र शासित प्रदेशों से कर जैसे भू–राजस्व, स्टाम्प पंजीकरण आदि अलग–अलग मदों से एकत्रित राजस्व शामिल हैं।
- **राजस्व व्यय (Revenue Expenditure):** यह केंद्र सरकार की भौतिक या वित्तीय संपत्तियों के निर्माण के अलावा अन्य उद्देश्यों के लिए किया गया व्यय है।

सार्वजनिक ऋण में बाह्य/विदेशी देयता का अनुपात (FY22)

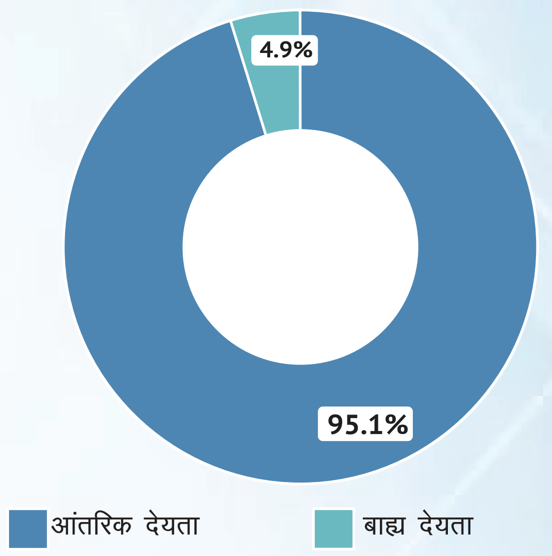

अध्याय 4: मौद्रिक प्रबंधन और वित्तीय मध्यस्थता: एक अच्छा वर्ष (Monetary Management And Financial Intermediation: A Good Year)

- **मौद्रिक विकास और तरलता (Liquidity) की स्थिति**
  - अप्रैल 2022 से जनवरी 2023 तक **रेपो रेट में 225 आधार बिंदु की वृद्धि** हुई है (4% से बढ़कर 6.25%)।
  - सख्त मौद्रिक नीति के कारण बाजार में **अधिशेष तरलता (चलनिधि) में कमी आई है।**
  - **रिजर्व मनी (M0) और ब्रॉड मनी (M3)** में वर्ष–दर–वर्ष क्रमशः 10.3% और 8.7% की वृद्धि हुई है, जबकि **मनी मल्टीप्लायर औसतन 5.1% पर स्थिर रहा है।**

नीतिगत दरें

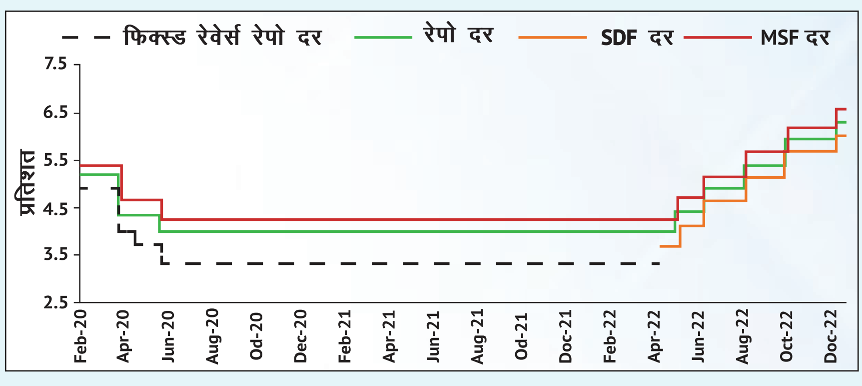

मुद्रा आपूर्ति के उपाय

रिजर्व मनी (M0): इसे हाई पावर्ड मनी, मौद्रिक आधार, बेस मनी आदि भी कहा जाता है। M0 = चलन में मुद्रा + RBI के पास बैंकों की जमा राशि + RBI के पास अन्य जमा राशि।

नैरो मनी (M1) = लोगों के पास मुद्रा + बैंकिंग प्रणाली में डिमांड डिपॉजिट (मांग जमा) (चालू खाता, बचत खाता) + RBI के पास अन्य जमाराशि।

M2 = M1 + डाकघर बचत बैंकों की बचत जमाराशि।

ब्रॉड मनी (M3) = M1 + बैंकिंग प्रणाली में सावधि जमाराशि (Time deposits)।

M4 = M3 + डाकघर बचत बैंकों के पास सभी प्रकार की जमाराशि।

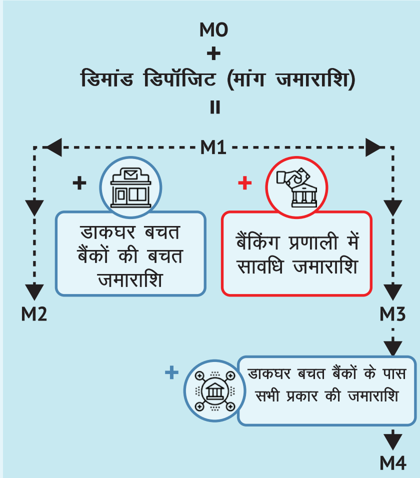

- **मौद्रिक नीति का प्रभाव (Monetary Policy Transmission):** वित्त वर्ष 2022-23 के दौरान रेपो दर में बदलाव के अनुरूप बैंकों की उधार और जमा दर में वृद्धि हुई है।
- **सरकारी प्रतिभूति (G-sec) में बाजार विकास: सरकारी प्रतिभूति (ट्रेजरी बिल्स और राज्य विकास ऋणों सहित) में ट्रेडिंग वॉल्यूम दो वर्षों के उच्चतम स्तर पर पहुंच गया है।** इसमें 6.3% की वर्ष-दर-वर्ष (YoY) वृद्धि दर्ज की गई है।
- **बैंकिंग क्षेत्रक:** सरकार ने पिछले कुछ वर्षों से बैंकिंग प्रणाली की बैलेंस शीट को क्लीन और मज़बूत बनाने के लिए रेकग्निशन, रेज़ोल्यूशन, रीकैपिटलाइज़ेशन और रिफॉर्म्स के 4R दृष्टिकोण को लागू किया है। इसके परिणामस्वरूप:
  - **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCBs) की परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार हुआ है।**
  - **सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां (GNPAs)** मार्च 2020 के **8.2% से घटकर** सितंबर 2022 में **7 वर्ष के निचले स्तर 5.0% पर पहुंच गई हैं।**
- **क्रेडिट ग्रोथ और रिकवरी:**
  - अप्रैल 2022 से बैंकों के गैर-खाद्य ऋण (Non-food credit) में **दो अंकों की वृद्धि हुई है।**
  - GDP के अनुपात के रूप में **NBFCs द्वारा प्रदान किए जाने वाले ऋण में लगातार वृद्धि हुई है।**
  - **इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (IBC) के माध्यम से बैंकों के लिए रिकवरी दर** अन्य माध्यमों की तुलना में **वित्त वर्ष 2022 में सबसे अधिक थी।**
- **पूंजी बाजार में विकास:**
  - **प्राथमिक बाजार (Primary Market):** वित्त वर्ष 2021-22 की तुलना में **IPOs की संख्या में लगभग दोगुने की वृद्धि और कंपनियों द्वारा जुटाए गए कुल फंड में लगभग तीन गुना वृद्धि हुई है।** 2022 में भारत के इतिहास में सबसे अधिक IPO लाया गया था।

शब्दावली को जानें

- **सख्त मौद्रिक नीति (Monetary Tightening policy):** इसका उद्देश्य आरक्षित दरों या रिजर्व रेपो और ब्याज दरों में वृद्धि करके एवं खुला बाजार परिचालन (Open Market Operations) के माध्यम से मुद्रा की आपूर्ति को कम करना है।
- **मनी मल्टीप्लायर:** मनी-मल्टीप्लायर बताता है कि कैसे मौद्रिक आधार में वृद्धि से मुद्रा की आपूर्ति कई गुना बढ़ जाती है। **इसे ब्रॉड मनी (M3) और रिजर्व मनी (M0) के अनुपात अर्थात् M3/M0 के रूप में परिभाषित किया जाता है।**
- **रेपो दर:** रेपो रेट (RR) वह दर है जिस पर RBI वाणिज्यिक बैंकों या वित्तीय संस्थानों को पैसा उधार देता है। इसके तहत बैंक ऋण लिखत या डेब्ट इंस्ट्रूमेंट्स को गिरवी रख RBI से अल्पकालिक धन उधार लेते हैं। इस प्रकार, रेपो मुद्रा बाजार का एक साधन है।
  - रेपो लेन-देन के तहत, प्रतिभूतियों का धारक प्रतिभूतियों को एक पूर्व निर्धारित तिथि और दर पर पुनः खरीदने का समझौता कर उन्हें निवेशक को बेचता है।
- **सरकारी प्रतिभूतियां (G-Sec):** सरकारी प्रतिभूति केंद्र सरकार या राज्य सरकारों द्वारा जारी एक व्यापार योग्य लिखत या ट्रेडेबल इंस्ट्रूमेंट होती हैं। यह सरकार पर एक प्रकार के ऋण संबंधी दायित्व को दर्शाता है।
  - **ट्रेजरी बिल (टी-बिल):** ये भारत सरकार द्वारा जारी अल्पकालिक सरकारी प्रतिभूतियां हैं। इन्हें वर्तमान में तीन अवधियों के रूप में जारी किया जाता है, अर्थात् 91 दिन, 182 दिन और 364 दिन।
  - **राज्य विकास ऋण (SDL):** ये राज्य सरकार द्वारा जारी दिनांकित सरकारी प्रतिभूतियां (Dated Government securities) हैं।

NBFCs को और उनके द्वारा दिए गए ऋण में वृद्धि

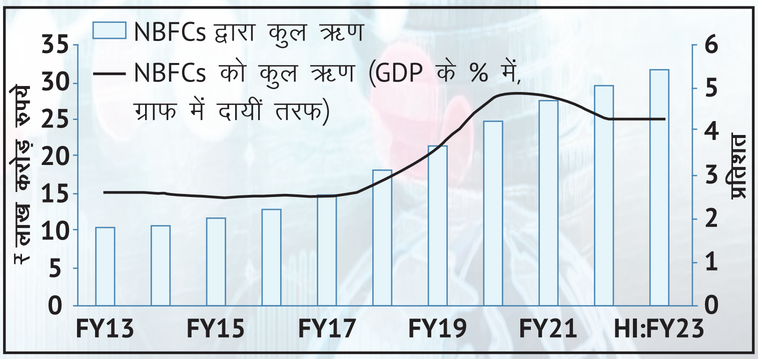

- **द्वितीयक बाजार (Secondary Market):** वैश्विक अस्थिरता के बावजूद, भारतीय शेयर बाजार ने अन्य समकक्ष देशों के शेयर बाजारों की तुलना में काफी बेहतर प्रदर्शन किया है।
- **बीमा बाजार में विकास:** भारत दुनिया के सबसे तेजी से बढ़ते बीमा बाजारों में से एक है। इसके जीवन बीमा प्रीमियम में 10.2% की वर्ष–दर–वर्ष वृद्धि दर्ज की गई है।

शब्दावली को जानें

- **बीमा पैठ (Insurance Penetration):** यह किसी वर्ष में कुल बीमा प्रीमियम और GDP के अनुपात को संदर्भित करता है।
- **बीमा घनत्व (Insurance Density):** यह जनसंख्या के सापेक्ष बीमा प्रीमियम के अनुपात को संदर्भित करता है। बीमा प्रीमियम प्रति व्यक्ति के आधार पर और अमेरिकी डॉलर में मापा जाता है। प्रति व्यक्ति बीमा प्रीमियम का स्तर किसी देश में बीमा क्षेत्रक के विकास के स्तर को दर्शाता है।

- **वित्त वर्ष 2012–13 से वित्त वर्ष 2021–22 के बीच बीमा की पहुंच और बीमा घनत्व में लगातार वृद्धि दर्ज की गई है।**
- **पेंशन क्षेत्रक:** वित्त वर्ष 2017–18 से वित्त वर्ष 2021–22 के बीच पेंशन ग्राहकों की संख्या तीन गुना से अधिक हो गई है।

अध्याय 5: कीमतें और मुद्रास्फीति– नाजुक परिस्थितियों पर कामयाबी (Prices and Inflation: Successful Tight-Rope Walking)

- **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (Consumer Price Index: CPI) मुद्रास्फीति:** भारत में CPI मुद्रास्फीति 2022 में निम्नलिखित तीन चरणों से गुज़री:
  - **यह पहले 7.8% के शीर्ष पर थी,**
  - **कुछ समय के लिए यह 7.0% के स्तर पर बनी रही, और**
  - **वर्ष के अंत तक यह घटकर लगभग 5.7% के स्तर पर आ गई।**

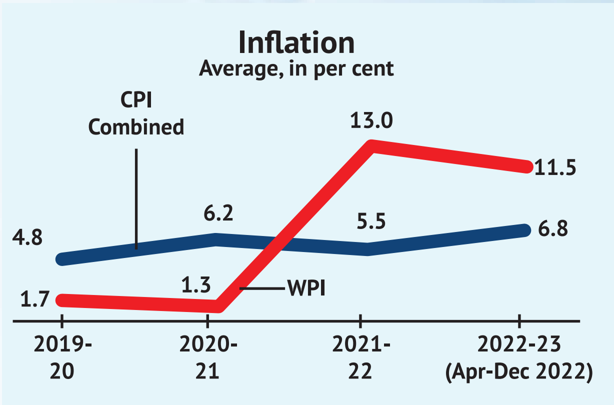

- **थोक मूल्य सूचकांक (Wholesale Price Index: WPI) मुद्रास्फीति:** WPI मुद्रास्फीति मई 2022 में 16.6% के शीर्ष स्तर तक पहुंच गई थी। इसके लिए महामारी के बाद आर्थिक गतिविधियां फिर से शुरू होने के कारण आयात पर अत्यधिक निर्भरता वाली वस्तुओं की बढ़ती अंतर्राष्ट्रीय कीमतें और रूस–यूक्रेन संघर्ष के कारण आपूर्ति श्रृंखला में आई बाधाएं उत्तरदायी थीं। हालांकि, WPI मुद्रास्फीति दिसंबर में कम हो कर 5.0% के स्तर पर पर आ गई।
- **WPI और CPI रुझान:** मई 2022 में WPI (उच्च) और CPI (निम्न) के मध्य अंतर अधिक था लेकिन उसके बाद से दोनों के मध्य अंतर कम हो रहा है।
  - **अंतर में बढ़ोतरी के कारण:** इसका पहला कारण तो यह है कि दोनों सूचकांकों के सापेक्ष भारांश में अंतर है। वहीं दूसरा कारण यह है कि आयात किए जाने वाले इनपुट्स की लागत बढ़ी है। खुदरा मूल्यों पर इन बढ़ी हुई लागतों का प्रभाव थोड़ी देर से ही सही लेकिन हुआ है और इसी वजह से इन दोनों सूचकांकों के बीच अंतर बढ़ा है।
  - **अंतर में कमी के कारण:** कच्चा तेल, लोहा, एल्युमिनियम तथा कपास जैसी वस्तुओं की मुद्रास्फीति में गिरावट के कारण WPI में कमी आई है। साथ ही, सेवाओं की कीमतों में वृद्धि के कारण CPI मुद्रास्फीति बढ़ी है।

शब्दावली को जानें

- **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI):** CPI के तहत किसी देश की खुदरा मुद्रास्फीति की गणना की जाती है। इसे "मार्केट बास्केट" के रूप में भी जाना जाता है। इसके तहत घरेलू इस्तेमाल की वस्तुओं की खुदरा कीमतों में बदलाव को ट्रैक किया जाता है।
- **थोक मूल्य सूचकांक (WPI):** WPI के तहत खुदरा कीमतों पर बेचे जाने से पहले माल की थोक मूल्य में बदलाव को मापा जाता है।
- **आवास मूल्य सूचकांक (HPI):** यह 18 राज्यों के 50 शहरों में आवासीय भवन संपत्तियों में मूल्य में परिवर्तन को दर्शाता है। इसे राष्ट्रीय आवास बैंक द्वारा तैयार और प्रकाशित किया जाता है।

- **घरेलू खुदरा मुद्रास्फीति:** खुदरा मुद्रास्फीति मुख्य रूप से **उच्चतर खाद्य मुद्रास्फीति के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई थी।**
  - मौजूदा वर्ष में अधिकांश राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में **शहरी मुद्रास्फीति की तुलना में ग्रामीण मुद्रास्फीति की दर में अधिक वृद्धि देखी गई है।** इसकी वजह मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आंशिक रूप से उच्चतर खाद्य मुद्रास्फीति रही है।
- **आवास मूल्य सूचकांक (Housing Price Indices: HPI):** संयुक्त HPI (HPI मूल्यांकन मूल्य तथा HPI बाजार मूल्य) के आकलन में समग्र रूप से वृद्धि हुई है। इससे आवास का **वित्त–पोषण करने वाले क्षेत्रक में फिर से तेजी आने के संकेत मिलते हैं।**

कीमतें और मुद्रास्फीति : कठिन परिस्थिति से सफलतापूर्वक निपटना

मुद्रास्फीति अपने चरम से नीचे आ गई है, वैश्विक स्तर पर वस्तुओं की कीमतों में कमी आई है

घरेलू आपूर्ति सुनिश्चित करने और महँगाई रोकने के लिए सरकारी उपाय

- प्रमुख कच्चे माल फेरोनिकल, कोकिंग कोल, पी.सी.आई. कोल कट पर आयात कर समाप्त
- पेट्रोल और डीजल के उत्पाद शुल्क में चरणबद्ध कटौती
- कपास पर सीमा शुल्क माफ किया गया
- गेहूँ के निर्यात पर रोक

- सरकार द्वारा आवास क्षेत्रक में **समय पर नीतिगत उपाय करने और आवास संबंधी ऋणों पर ब्याज दरों को कम रखने** से आवास क्षेत्रक में मांग को बढ़ाने में काफी मदद मिली है। इससे वित्त वर्ष 2022–23 के दौरान बड़ी संख्या में खरीदार किफायती आवास खरीदने की ओर आकर्षित हुए हैं।

अध्याय 6: सामाजिक अवसंरचना और रोजगार: व्यापक व्यवस्था (Social Infrastructure and Employment: Big tent)

- सरकार के कुल व्यय में **सामाजिक सेवाओं पर किए जाने वाले व्यय का हिस्सा** वित्त **वर्ष 2023 में बढ़कर 26.6% हो गया है।**
  - सामाजिक सेवाओं के तहत **स्वास्थ्य पर किए जाने वाले व्यय का हिस्सा** वित्त वर्ष 2018–19 के 21% से बढ़कर वित्त वर्ष 2023 में 26% हो गया है।
- **मानव विकास मापदंडों में सुधार:**
  - 2021 की मानव विकास सूचकांक (HDI) रिपोर्ट में **भारत 191 देशों में से 132 वें स्थान पर था।**
  - UNDP की बहु–आयामी गरीबी रिपोर्ट अनुसार, भारत में **16.4% आबादी बहु–आयामी रूप से गरीब है।**
- **आकांक्षी जिला कार्यक्रम:** वित्तीय समावेशन के संदर्भ में कई आकांक्षी जिलों ने गैर–आकांक्षी जिलों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है।
- **श्रम सुधार संबंधी उपाय:** अधिकांश राज्यों ने चारों श्रम संहिताओं को अपना लिया है।
  - 31 दिसम्बर, 2022 तक कुल मिलाकर **28.5 करोड़ से भी अधिक असंगठित श्रमिकों को ई–श्रम पोर्टल पर पंजीकृत किया जा चुका था।** ई–श्रम पोर्टल पर पंजीकृत श्रमिकों में कृषि, घरेलू और निर्माण कार्य करने वाले श्रमिकों का नामांकन सर्वाधिक है। गौरतलब है कि ई–श्रम पोर्टल, असंगठित श्रमिकों का एक राष्ट्रीय डेटाबेस है।
  - **आधार:** 318 केंद्रीय योजनाएं और राज्यों की 720 से अधिक प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) योजनाएं आधार अधिनियम, 2016 की धारा 7 के तहत अधिसूचित हैं। इस प्रकार ये सभी योजनाएं वित्तीय सेवाओं, सब्सिडी और लाभों के लक्षित वितरण के लिए आधार का उपयोग करती हैं।

सरकार (केंद्र और राज्य संयुक्त रूप से) द्वारा सामाजिक सेवा क्षेत्रक व्यय से जुड़े रुझान

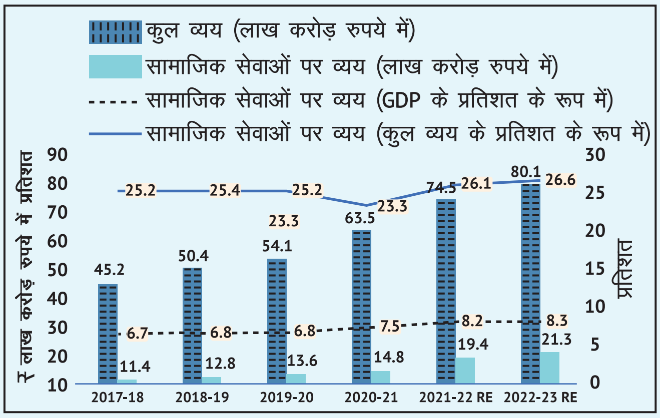

स्रोत: भारतीय रिजर्व बैंक, केंद्र और राज्य सरकारों के बजटीय दस्तावेज।

आधार के प्रमुख उपयोग

- आधार – प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) में उपयोग
- आधार सक्षम भुगतान प्रणाली (Aadhaar Enabled Payment Systems) में उपयोग
- JAM (जन–धन, आधार और मोबाइल) ट्रिनिटी में उपयोग
- वन नेशन वन राशन कार्ड योजना में उपयोग
- पी.एम. किसान सम्मान निधि में उपयोग
- को–विन में उपयोग
- चेहरा प्रमाणीकरण (फेस ऑथेंटिकेशन) में उपयोग

- **रोजगार संबंधी रुझान:**

मापदंड	रुझान	
श्रम बाजार	शहरी और ग्रामीण दोनों ही क्षेत्रों में श्रम **बाजार कोविड–19 पूर्व के स्तर से बेहतर स्तर पर है।**	वर्ष 2022 के मध्य तक बेरोजगारी दर 8.3% से घटकर 7.2% हो गई है।
श्रमिक जनसंख्या अनुपात (Worker Population Ratio)	**आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (2020–21)** के अनुसार, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में **पुरुषों एवं महिलाओं दोनों के मामले में श्रमिक जनसंख्या अनुपात में सुधार हुआ है।**	
महिला श्रम बल भागीदारी दर (Labour Force Participation Rate: LFPR)	आर्थिक सर्वेक्षण में **महिला श्रम बल भागीदारी दर की गणना में माप से संबंधित समस्याओं को प्रदर्शित किया गया है।**	
संगठित विनिर्माण क्षेत्रक में रोजगार	**उद्योगों के वार्षिक सर्वेक्षण के अनुसार,** खाद्य उत्पाद उद्योग में सबसे अधिक रोजगार (11.1%) के साथ संतुलित वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है।	
पेंशन अंशदान (Pension subscriptions)	वित्त वर्ष 2020–21 की तुलना में **कर्मचारी पेंशन योजना (EPS) और राष्ट्रीय पेंशन योजना के अंशदान में निवल वृद्धि हुई है।**	
मनरेगा	**मनरेगा के तहत काम की मांग करने वाले व्यक्तियों की संख्या महामारी से पहले के स्तर पर पहुंच गई है।** मनरेगा के तहत वित्त वर्ष 2022–23 में अब तक लगभग 70.6 लाख कार्य पूर्ण हो चुके हैं।	

स्कूली शिक्षा सुनिश्चित करना (Ensuring School Education):

- पूर्व–प्राथमिक स्तर (वित्त वर्ष 2021–22 में 1.1 करोड़ से घटकर 1 करोड़) को छोड़कर **स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों** अर्थात् प्राथमिक, उच्च–प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तर पर बच्चों के **नामांकन में वृद्धि दर्ज की गई है।**
- बालक और बालिकाओं दोनों के मामले में सभी स्तरों पर **स्कूल ड्रॉप आउट दर में लगातार गिरावट जारी है।**
- प्राथमिक स्तर सहित अन्य स्तरों पर **छात्र–शिक्षक अनुपात में सुधार हुआ है।** यह अनुपात वित्त वर्ष 2012–13 में 34 था जो **वित्त वर्ष 2021–22 में 26.2 हो गया है।**

उच्चतर शिक्षा (Higher Education):

- **उच्चतर शिक्षा में कुल नामांकन** वित्त वर्ष 2019–20 में 3.9 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2020–21 में लगभग 4.1 करोड़ हो गया।
  - **महिलाओं का नामांकन** वित्त वर्ष 2019–20 के 1.9 करोड़ से बढ़कर वित्त वर्ष 2020–21 में 2.0 करोड़ हो गया।
- **उच्चतर शिक्षा में शिक्षकों (Faculties) की कुल संख्या लगभग 15.5 लाख है,** जिनमें से लगभग 57.1% पुरुष और 42.9% महिलाएं हैं।

कौशल विकास (Skill Development):

- **आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (Periodic Labour Force Survey)** के अनुसार वित्त **वर्ष 2018–19 और 2019–2020 की तुलना में वित्त वर्ष 2020–21** में युवाओं (15–29 वर्ष की आयु) और कामकाजी आबादी (15–59 वर्ष की आयु) के मध्य औपचारिक पेशेवर/तकनीकी प्रशिक्षण में सुधार हुआ है।
- **प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)** के तहत लगभग 1.1 करोड़ लोगों को प्रशिक्षित किया गया है।
- **राष्ट्रीय अप्रेंटिसशिप प्रोत्साहन योजना** के शुभारंभ के बाद से लगभग **21.4 लाख प्रशिक्षु** उद्योगों से जुड़ चुके हैं।
- **संकल्प {आजीविका संवर्धन के लिए कौशल अर्जन और ज्ञान जागरूकता (Skill Acquisition and Knowledge Awareness for Livelihood Promotion: SANKALP)} पहल के तहत 724 जिला कौशल समितियों का गठन** किया गया है।

स्वास्थ्य (Health):

- बजट अनुमान (Budget Estimates: BE) के अनुसार, **स्वास्थ्य क्षेत्रक पर केंद्र और राज्य सरकार का बजटीय व्यय वित्त वर्ष 2022–23** में GDP का 2.1% एवं संशोधित अनुमान (Revised Estimates: RE) के अनुसार वित्त वर्ष 2021–22 में 2.2% तक पहुंच गया है। हालांकि वित्त वर्ष 2021 में यह 1.6% था।
- **आउट ऑफ पॉकेट व्यय:** यह व्यय कुल स्वास्थ्य व्यय के प्रतिशत के रूप में वित्त वर्ष 2013–14 में 64.2% से घटकर **वित्त वर्ष 2018–19 में 48.2% हो गया है।**
- **शिशु मृत्यु दर (Infant Mortality Rate: IMR), पांच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर (U5MR) और नवजात मृत्यु दर (Neonatal Mortality Rate: NMR) में लगातार गिरावट देखी गई है।**
- देश भर में 1.54 लाख से अधिक स्वास्थ्य और आरोग्य केंद्रों का संचालन आरंभ किया गया। इसके परिणामस्वरूप **आयुष्मान भारत के लाभार्थियों की संख्या लगभग 22 करोड़ तक पहुंच गई है।**

सामाजिक सुरक्षा (Social Protection):

- **प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना:** इस योजना के तहत लगभग 14.96 करोड़ लोगों को नामांकित किया गया है। साथ ही, लगभग 6.4 लाख दावों का भुगतान कर दिया गया है।
- **प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना:** इस योजना के तहत संचयी रूप से लगभग 32.1 करोड़ व्यक्तियों को नामांकित और लगभग 1.1 लाख दावों का भुगतान किया गया है।
- **पीएम स्ट्रीट वेंडर आत्मनिर्भर निधि योजना:** इसके तहत, लगभग 45 लाख ऋण आवेदन स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें से लगभग 39 लाख आवेदकों को ऋण वितरित किए जा चुके हैं।
- **प्रधान मंत्री मुद्रा योजना:** इस योजना के माध्यम से 38.4 करोड़ से अधिक ऋण स्वीकृत कर दिए गए हैं।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था (Rural Economy):

- **देश की कुल आबादी का लगभग 65%** ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है, जिनमें से लगभग 47% आबादी कृषि पर निर्भर है।
- राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण 2019–21 के अनुसार अन्य घटकों के साथ–साथ, विद्युत की सुलभता, बेहतर पेयजल स्रोतों की उपलब्धता, स्वास्थ्य बीमा योजनाओं के तहत कवरेज सहित **ग्रामीण जीवन की गुणवत्ता में काफी सुधार हुआ है।**
- **दीनदयाल अंत्योदय योजना–राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन:** इस मिशन ने गरीब और कमजोर समुदायों की कुल 8.7 करोड़ महिलाओं को 81 लाख स्वयं सहायता समूहों में संगठित किया है।

ग्रामीण आवास (Rural Housing):

- **प्रधान मंत्री आवास योजना–ग्रामीण:** इस योजना के तहत अब तक कुल 2.7 करोड़ घरों के निर्माण कार्य को मंजूरी प्रदान कर दी गई है। साथ ही, इसमें से 2.1 करोड़ घरों का निर्माण कार्य पूरा किया जा चुका है।

पेयजल और स्वच्छता (Drinking Water and Sanitation):

- **जल जीवन मिशन:** इस मिशन के परिणामस्वरूप 19.4 करोड़ ग्रामीण परिवारों में से 11.0 करोड़ परिवारों को उनके घरों में नल के माध्यम से जल की आपूर्ति की जा रही है।
- **जलदूत ऐप:** इस ऐप के माध्यम से कुल लगभग 3.7 लाख कुओं के जल स्तर को मापा गया है तथा उनके जल स्तर को केंद्रीय रिकॉर्ड में अपडेट किया गया है।
- **स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण):** इस योजना के अंतर्गत लगभग 1.2 लाख गांवों को **ODF (खुले में शौच से मुक्त) प्लस घोषित किया गया है।**
  - **अंडमान और निकोबार द्वीप समूह ने अपने सभी गांवों को ODF प्लस मॉडल के रूप में घोषित किया है। इस प्रकार, यह भारत का पहला स्वच्छ, सुजल प्रदेश बन गया है।**

LPG कनेक्शन:

- **प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना 2.0, स्वच्छ ईंधन बेहतर जीवन:** इससे LPG कनेक्शन का कवरेज वर्ष 2016 के 62% से बढ़कर वर्ष 2021 में 99.8% हो गया है।

ग्रामीण कनेक्टिविटी:

- **प्रधान मंत्री ग्राम सड़क योजना:** इसकी योजना की शुरुआत के बाद से अब तक **7.2 लाख किलोमीटर लंबी सड़कों और 7,789 लॉन्ग स्पैन ब्रिजेज़ का निर्माण किया जा चुका है।**

विद्युत:

- **सौभाग्य (प्रधान मंत्री सहज बिजली हर घर योजना) और दीनदयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना** ने सार्वभौमिक घरेलू विद्युतीकरण के अपने उद्देश्य को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है।

अध्याय 7: जलवायु परिवर्तन और पर्यावरण: भविष्य का सामना करने की तैयारी (Climate Change and Environment: Preparing to Face the Future)

- **भारत,** जलवायु परिवर्तन के प्रति **सर्वाधिक सुभेद्य देशों में से एक है,** जबकि भारत का वैश्विक संचयी उत्सर्जन (1850–2019 की अवधि के दौरान), विश्व के कुल उत्सर्जन का मात्र 4% है।
- भारत ने **वर्ष 2070 तक निवल शून्य उत्सर्जन (नेट जीरो एमिशन) लक्ष्य हासिल करने के लिए निवल शून्य प्रतिबद्धता (Net Zero Pledge)** की घोषणा की है।
- **जलवायु संबंधी कार्रवाई की दिशा में भारत की प्रगति:**
  - भारत ने वर्ष 2030 से पहले ही गैर–जीवाश्म ईंधन से **40% स्थापित विद्युत क्षमता** के लक्ष्य को प्राप्त कर लिया है।
  - **वर्ष 2030 तक गैर–जीवाश्म ईंधन की अनुमानित स्थापित क्षमता 500 गीगावाट से अधिक होगी।** इसके परिणामस्वरूप वर्ष 2014–15 की तुलना में वर्ष 2029–30 तक औसत उत्सर्जन दर में लगभग 29% की गिरावट आ सकती है।
  - भारत, **वर्ष 2005 के स्तर से अपने GDP की उत्सर्जन तीव्रता (Emissions Intensity) को वर्ष 2030 तक 45%** तक कम करेगा।
  - भारत वर्ष 2030 तक गैर–जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से **लगभग 50% संचयी विद्युत उत्पादन क्षमता को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है।**
- **जलवायु परिवर्तन संबंधी नीतियों के कार्यान्वयन के समक्ष चुनौतियां–**
  - विकसित देशों में नागरिक अपनी **जीवन शैली में बदलाव करने के प्रति अनिच्छुक हैं।**
  - **दुर्लभ भू–तत्वों (Rare Earth Elements: REE) और महत्वपूर्ण खनिजों (Critical Minerals: CM)** की उपलब्धता का अभाव है।
- **अन्य पर्यावरणीय मुद्दों से संबंधित घटनाक्रम**
  - भारत ने लक्ष्य के रूप में निर्धारित वर्ष 2022 से चार वर्ष पहले वर्ष **2018 में ही बाघों की संख्या को दोगुना करने का लक्ष्य हासिल कर लिया है।**
  - निर्धारित **एकल–उपयोग वाली प्लास्टिक वस्तुओं** के विनिर्माण, आयात, भंडारण, वितरण, बिक्री और उपयोग **पर प्रतिबंध लगाया गया है।**
  - सरकार द्वारा **बैटरी अपशिष्ट प्रबंधन नियम, 2022** को प्रकाशित और **ई–अपशिष्ट (प्रबंधन) नियम, 2022** को अधिसूचित किया गया।
  - **राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन:** इसके तहत वर्ष 2030 तक प्रति वर्ष कम से कम 5 MMT (मिलियन मीट्रिक टन) की हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है।
    - इस मिशन से जीवाश्म ईंधन के आयात में 1 लाख करोड़ रुपये से अधिक की संचयी कमी की जा सकेगी और वर्ष 2030 तक 6 लाख से अधिक नौकरियों का सृजन किया जा सकेगा।

एक स्वच्छ भविष्य के लिए एनर्जी ट्रांजिशन

राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना
इसके तहत जलवायु संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए आठ मिशन शामिल हैं।

मौजूदा NDC को अपडेट करना
पर्यावरण के प्रति जागरूक जीवन शैली अपनाने के लिए लाइफ (Lifestyle For Environment: LIFE) जन आंदोलन।

स्थापित विद्युत क्षमता में नवीकरणीय ऊर्जा की हिस्सेदारी
सौर फोटोवोल्टिक मॉड्यूल, सेमीकंडक्टर विनिर्माण के लिए उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन (PLI) योजना।

राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन
नवीकरणीय ऊर्जा की क्षमता में लगभग 125 गीगावाट की वृद्धि करना।

सॉवरेन ग्रीन बॉण्ड
RBI ने दो चरणों में 5 वर्षीय और 10 वर्षीय श्रेणी वाले बॉण्ड्स की नीलामी की है, जिनमें से प्रत्येक श्रेणी का मूल्य 4,000 करोड़ रुपये है।

राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना

राष्ट्रीय सौर मिशन	• अक्टूबर 2022 तक 61.62 गीगावाट की सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित की जा चुकी है।
राष्ट्रीय संधारणीय पर्यावास मिशन (National Mission on Sustainable Habitat)	• 6.63 मिलियन टन तेल के बराबर (Million Tonnes of Oil Equivalent: MTOE) की ऊर्जा बचत लक्ष्य के लिए परफॉर्म, अचीव एंड ट्रेड (PAT) चक्र–VII को अधिसूचित किया गया।
राष्ट्रीय संधारणीय पर्यावास मिशन (National Mission on Sustainable Habitat)	• 721 कि.मी. के मेट्रो रेल नेटवर्क का परिचालन आरंभ हो गया है। • 62.79 लाख व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों और 6.21 लाख सामुदायिक एवं सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया गया।
राष्ट्रीय हरित भारत मिशन (National Mission for a Green India)	• 2.1 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में वनीकरण लक्ष्य के लिए 626.96 करोड़ रुपये आवंटित किए गए।
राष्ट्रीय जल मिशन (National Water Mission)	• जल शक्ति अभियान: कैच द रेन 2022
जलवायु परिवर्तन के लिए रणनीतिक ज्ञान पर राष्ट्रीय मिशन (National Mission on Strategic Knowledge for Climate Change)	• जलवायु परिवर्तन के लिए 12 उत्कृष्टता केंद्र बनाए गए और उन्हें मजबूत किया गया (जून 2021)।
हिमालयी पारितंत्र को बनाए रखने के लिए राष्ट्रीय मिशन (National Mission for Sustaining Himalayan Ecosystems)	• अंतर–विश्वविद्यालय संघ (Inter-University Consortium)। • 8 प्रमुख अनुसंधान एवं विकास कार्यक्रम शुरू किए गए।
राष्ट्रीय संधारणीय कृषि मिशन (National Mission for Sustainable Agriculture)	• वित्त वर्ष 2022–2023 के लिए प्रमुख लक्ष्य जैविक खेती के तहत 0.15 लाख हेक्टेयर और सूक्ष्म सिंचाई के तहत 10 लाख हेक्टेयर को कवर करना है।

अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की पहलें

- अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन (International Solar Alliance: ISA)
- आपदा रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन (Coalition for Disaster Resilient Infrastructure: CDRI)
- लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन (LeadIT)

अध्याय 8: कृषि और खाद्य प्रबंधन: खाद्य सुरक्षा से पोषण सुरक्षा तक (Agriculture and Food management: From Food Security to Nutritional Security)

- पिछले कई वर्षों में कृषि और संबंधित क्षेत्रक का प्रदर्शन उत्साहजनक रहा है।
- **ऋण की उपलब्धता में वृद्धि:**
  - वर्ष 2018–19 में **मत्स्य पालन और पशुपालन करने वाले किसानों को भी किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) की सुविधा प्रदान की गई।**
  - वर्ष 2021–22 में **कृषि ऋण, निर्धारित लक्ष्य से लगभग 13% अधिक था।**
  - वर्ष 2020–21 में **कृषि में निजी निवेश बढ़कर 9.3% हो गया।**
- **संबंधित क्षेत्रक (Allied Sectors):**
  - वर्ष 2014–15 से वर्ष 2020–21 के दौरान पशुधन क्षेत्रक में 7.9% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (Compound Annual Growth Rate: CAGR) दर्ज की गई। साथ ही, **वर्ष 2020–21 में कुल कृषि GVA (सकल मूल्य वर्धन /Gross Value Added) में इसका योगदान लगभग 30.1 प्रतिशत हो गया।**
  - वर्ष 2016–17 से **मत्स्य पालन क्षेत्रक** की वार्षिक औसत वृद्धि दर लगभग 7% रही है और **कुल कृषि GVA में इसकी हिस्सेदारी लगभग 6.7 प्रतिशत है।**
  - **डेयरी क्षेत्रक** पशुधन क्षेत्रक का सबसे महत्वपूर्ण घटक है, जो **सीधे तौर पर आठ करोड़ से अधिक किसानों को रोजगार प्रदान करता है।**
- **सहकारी समितियों में ग्रामीण आर्थिक रूपांतरण की व्यापक क्षमता मौजूद है।**
  - देश में 8.5 लाख पंजीकृत सहकारी समितियां मौजूद हैं और 98% गांव प्राथमिक कृषि ऋण समितियों (PACS) द्वारा कवर किए गए हैं।
  - लगभग 19% कृषि वित्त, सहकारी समितियों के माध्यम से प्रदान किए जाते हैं।
- **खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रक:** खाद्य प्रसंस्करण उद्योग क्षेत्रक लगभग **8.3% की औसत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ रहा है।**
  - **वर्ष 2021–22** के दौरान प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात सहित कृषि-खाद्य निर्यात का मूल्य, **भारत के कुल निर्यात का लगभग 10.9% था।**
- **खाद्य सुरक्षा:** 1 जनवरी, 2023 से एक वर्ष के लिए राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम के तहत लगभग 81.4 करोड़ लाभार्थियों को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाएगा।
  - **'अंतर्राष्ट्रीय मोटा अनाज वर्ष (International Year of Millets)' नामक पहल के माध्यम से मोटे अनाजों को बढ़ावा** देने में भारत अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

कृषि और संबंधित गतिविधियां

आधार मूल्यों पर GVA की वृद्धि दर

वर्ष	वृद्धि दर
2019-20	5.5%
2020-21*	3.3%
2022-23*	3.0%
2023-24@	3.5%

*पहला संशोधित अनुमान ** अनंतिम अनुमान # प्रथम अग्रिम अनुमान

कृषि और खाद्य प्रबंधन: खाद्य सुरक्षा से पोषण सुरक्षा तक

- वर्ष 2018 से सभी निर्धारित फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य अखिल भारतीय भारित औसत उत्पादन लागत (All India weighted average cost) का 1.5 गुना तय किया गया है।
- **कृषि क्षेत्रक के लिए संस्थागत ऋण में** निरंतर वृद्धि जारी है।
- वर्ष 2021–22 में भारत में खाद्यान्न का उत्पादन **315.7 मिलियन टन हुआ।**
- पी.एम.–किसान योजना के तहत **11.3 करोड़ किसानों को शामिल** किया गया है। इसका उद्देश्य किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करना है।
- **कृषि अवसंरचना कोष (Agriculture Infrastructure Fund: AIF)** के तहत फसल की कटाई के बाद (पोस्ट–हार्वेस्ट) सहायता और सामुदायिक कृषि परिसंपत्तियों के लिए 13,681 करोड़ रुपये की मंजूरी प्रदान की गई है।
- राष्ट्रीय कृषि बाजार योजना (ई–नाम/E-NAM) के तहत **1.74 करोड़ किसानों और 2.39 लाख व्यापारियों** को पंजीकृत किया गया है।

अध्याय 9: उद्योग: स्थायी रिकवरी (Industry: Steady Recovery)

- उद्योग क्षेत्रक ने वित्त वर्ष 2011–12 और 2020–21 के दौरान देश में कुल **GVA में लगभग 30%** का योगदान दिया है। साथ ही, इसने 12.1 करोड़ से अधिक लोगों को रोजगार भी प्रदान किया है।
  - वित्त वर्ष 2022–23 की पहली छमाही के लिए उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार औद्योगिक क्षेत्रक का **GVA 3.7% बढ़ा है।** यह पिछले दशक की पहली छमाही में प्राप्त **2.8% की औसत वृद्धि से अधिक है।**

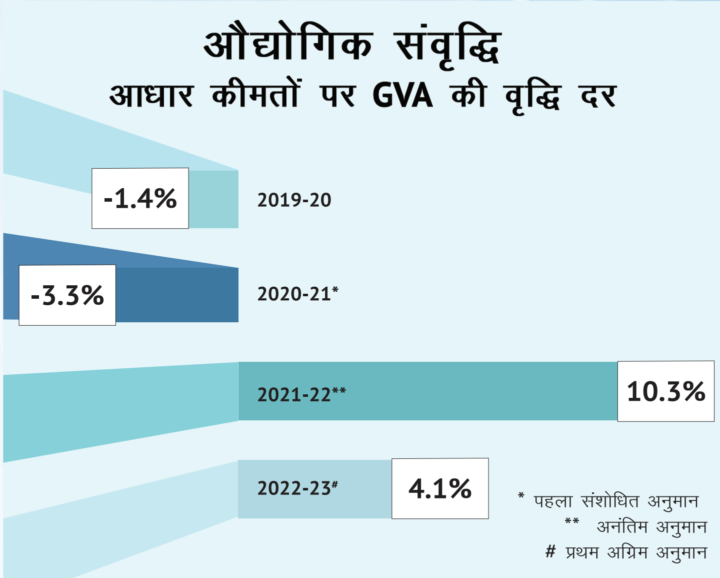

- **औद्योगिक विकास के लिए मांग प्रोत्साहन:**
  - निजी अंतिम उपभोग व्यय में अत्यधिक वृद्धि।
  - वर्ष की पहली छमाही के दौरान निर्यात प्रोत्साहन।
  - सार्वजनिक पूंजीगत व्यय में वृद्धि के कारण निवेश की मांग में वृद्धि।
  - मजबूत बैंक और कॉरपोरेट बैलेंस शीट।
- मांग प्रोत्साहन के प्रति उद्योग की **आपूर्ति प्रतिक्रिया** मजबूत रही है।
- **पर्चेजिंग मैनेजर्स इंडेक्स (PMI) मैन्युफैक्चरिंग** में जुलाई 2021 से 18 महीनों तक विस्तार दर्ज किया गया है। इसके अतिरिक्त, औद्योगिक उत्पादन सूचकांक (IIP) में भी बेहतर वृद्धि दर्ज की गई है।
- **आठ प्रमुख उद्योगों** (Eight core industries) में सतत वृद्धि जारी है जो कि औद्योगिक गतिविधियों में व्यापक क्षमता को दर्शाती है। ये आठ प्रमुख उद्योग हैं: कोयला, उर्वरक, सीमेंट, स्टील, बिजली, रिफाइनरी उत्पाद, कच्चा तेल और प्राकृतिक गैस।
- जनवरी 2022 से **सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) को प्रदान किए जाने वाले ऋण में लगभग 30% की औसत वृद्धि हुई है।**
  - अक्टूबर 2022 से बड़े उद्योगों को प्रदान किए जाने वाले ऋण में दो अंकों की वृद्धि देखी गई है।
- **विनिर्माण क्षेत्रक में FDI अंतर्वाह:** पिछले कुछ वर्षों से विनिर्माण क्षेत्रक में वार्षिक FDI इक्विटी अंतर्वाह नियमित रूप से बढ़ रहा है।

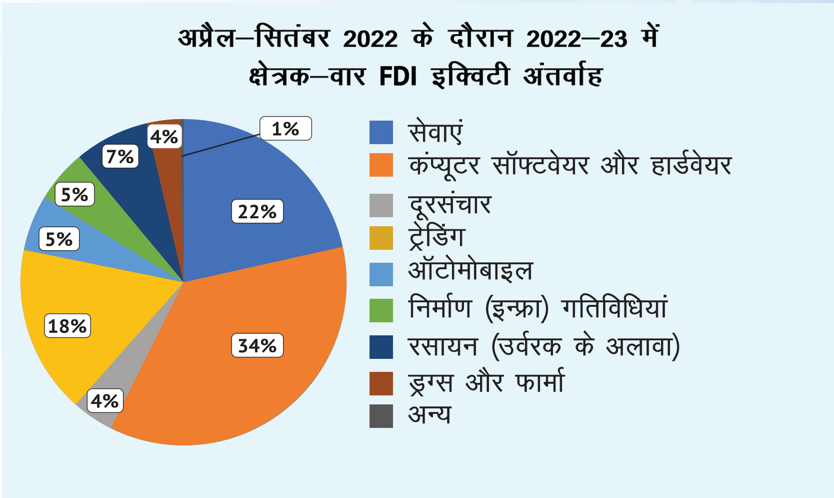

शब्दावली को जानें

- **फ़्लिपिंग (Flipping):** यह किसी भारतीय कंपनी के संपूर्ण स्वामित्व को किसी विदेशी कंपनी को हस्तांतरित करने की प्रक्रिया है। इसके तहत भारतीय कंपनी के स्वामित्व वाली सभी बौद्धिक संपदा और डेटा का हस्तांतरण कर दिया जाता है।

- बिक्री के मामले में जापान और जर्मनी को पीछे छोड़ते हुए **भारत तीसरा सबसे बड़ा ऑटोमोबाइल बाजार (दिसंबर 2022 में) बन गया है।**
- **फार्मा इंडस्ट्री या औषधि उद्योग में FDI का अंतर्वाह चार गुना बढ़ गया है।** यह वित्त वर्ष 2018–19 के 180 मिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2021–22 में 699 मिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया था।
- वैश्विक मूल्य श्रृंखला में भारत की भागीदारी को और बढ़ाने के लिए, **'मेक इन इंडिया 2.0' के तहत 27 क्षेत्रकों पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।**

अध्याय 10: सेवाएं: शक्ति का स्रोत (Services: Source of Strength)

सेवा क्षेत्रक का प्रदर्शन:

- **डिजिटल सपोर्ट, क्लाउड सेवाओं और बुनियादी ढांचे के आधुनिकीकरण संबंधी कारकों की उच्चतर मांग** के कारण भारत का सेवा निर्यात लचीला बना रहा।
- **भारत 2021 में शीर्ष 10 सेवा निर्यातक देशों में शामिल था।**
  - वैश्विक स्तर पर वाणिज्यिक सेवाओं के निर्यात में भारत की हिस्सेदारी **2015 के 3% से बढ़कर 2021 में 4% हो गई थी।**
- जुलाई 2022 से **सेवा क्षेत्रक में 16% से अधिक की वृद्धि हुई है।**
- जुलाई 2022 से **PMI सेवाओं में मजबूत विस्तार हुआ है।** यह सेवा क्षेत्रक की बढ़ती गतिविधि का संकेतक है।

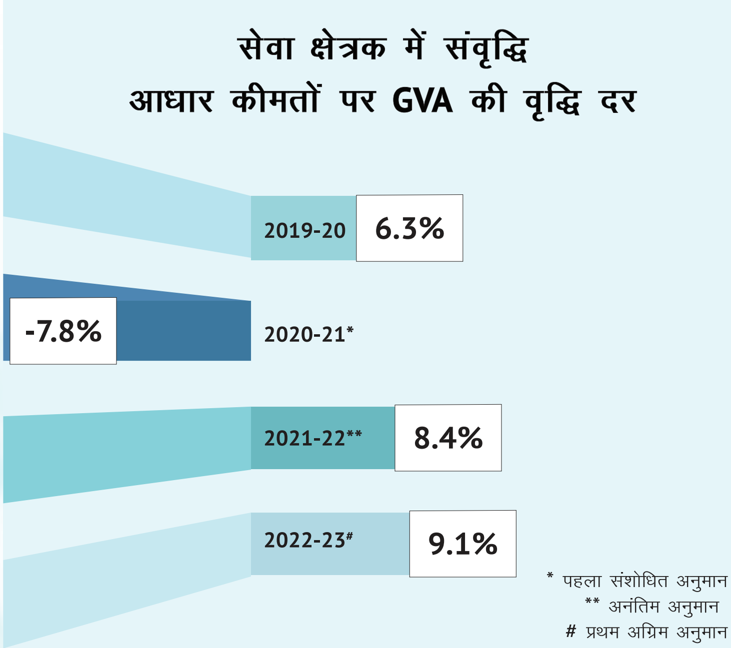

सेवा क्षेत्रक का प्रदर्शन:

क्षेत्रक	रुझान	अन्य जानकारी/विवरण
रियल एस्टेट	↑ 2021 और 2022 के बीच 50% की वृद्धि	JLL के ग्लोबल रियल एस्टेट ट्रांसपेरेंसी इंडेक्स 2022 के अनुसार, **भारत के रियल एस्टेट बाजार की पारदर्शिता वैश्विक स्तर पर शीर्ष दस सबसे उन्नत बाजारों में से एक है।**
पर्यटन और होटल उद्योग	↑ वृद्धि प्रदर्शित की है	वित्त वर्ष 2020–21 में **मेडिकल टूरिज्म इंडेक्स में भारत 10वें स्थान पर था।**
सूचना प्रौद्योगिकी और व्यवसाय प्रक्रिया प्रबंधन (Information Technology and Business Process Management: IT-BPM)	↑ 2021 और 2022 के बीच 15.5% की वृद्धि	**सूचना प्रौद्योगिकी सेवाओं का राजस्व में सर्वाधिक हिस्सा** (51% से अधिक) है।
ई–कॉमर्स	↑ वृद्धि प्रदर्शित की है	ई–कॉमर्स बाजार द्वारा **2025 तक प्रतिवर्ष 18% की दर से वृद्धि करने का अनुमान है।**
डिजिटल वित्तीय सेवाएं	↑ वृद्धि प्रदर्शित की है	नवीनतम ग्लोबल फिनटेक एडॉप्शन इंडेक्स के अनुसार भारत में **फिनटेक को अपनाने की दर 87% है।** यह 64% के वैश्विक औसत से काफी अधिक है।

सेवाओं में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI):

- **अंकटाड (UNCTAD) की वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट–2022 में भारत को 2021 में FDI प्राप्त करने वाले शीर्ष 20 देशों में 7वां स्थान प्रदान किया गया था।**
- वित्त वर्ष 2021–22 में भारत को **अब तक का सर्वाधिक 84.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर का FDI अंतर्वाह** प्राप्त हुआ था। इसमें से सेवा क्षेत्रक में **7.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर का FDI इक्विटी अंतर्वाह भी शामिल था।**

शब्दावली को जानें

फिनटेक (वित्तीय प्रौद्योगिकी): यह व्यवसायों द्वारा उपयोग किए जाने वाले सॉफ़्टवेयर और अन्य आधुनिक तकनीकों को संदर्भित करता है, जो स्वचालित रूप से तथा बेहतर वित्तीय सेवाएं प्रदान करती हैं।

अध्याय 11: वैदेशिक क्षेत्रक: सतर्क और आशावान (External Sector: Watchful and Hopeful)

- **पण्य व्यापार (Merchandise Trade) की प्रवृत्ति:** वित्त वर्ष 2021–22 में भारत ने 422 बिलियन अमेरिकी डॉलर का अब तक का सर्वाधिक वार्षिक पण्य/वस्तु निर्यात किया है।
  - निर्यात की प्रमुख वस्तुओं में **पेट्रोलियम उत्पाद, रत्न व आभूषण, कार्बनिक व अकार्बनिक रसायन, दवाएं और फार्मास्यूटिकल्स** आदि शामिल हैं।
- **सेवा निर्यात की प्रवृत्ति:** वित्त वर्ष 2021–22 में भारत का सेवा निर्यात 254.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा, जो **वित्त वर्ष 2020–21 की तुलना में 23.5% की वृद्धि दर्शाता है।**
  - भारत के कुल सेवा निर्यात में संयुक्त रूप से सॉफ्टवेयर और व्यावसायिक सेवाओं की हिस्सेदारी 60% से अधिक है।
- **विदेशी मुद्रा भंडार:**
  - दिसंबर 2022 के अंत में, भारत का विदेशी मुद्रा भंडार **563 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो 9.3 महीनों के आयात को कवर करने के लिए पर्याप्त है।**
  - नवंबर 2022 के अंत तक, **भारत दुनिया में 6वां सबसे बड़ा विदेशी मुद्रा भंडार वाला देश बन गया।**
  - **विप्रेषण (Remittances),** सेवा–निर्यात के बाद बाह्य (External) **वित्त–पोषण का दूसरा सबसे बड़ा स्रोत है।**

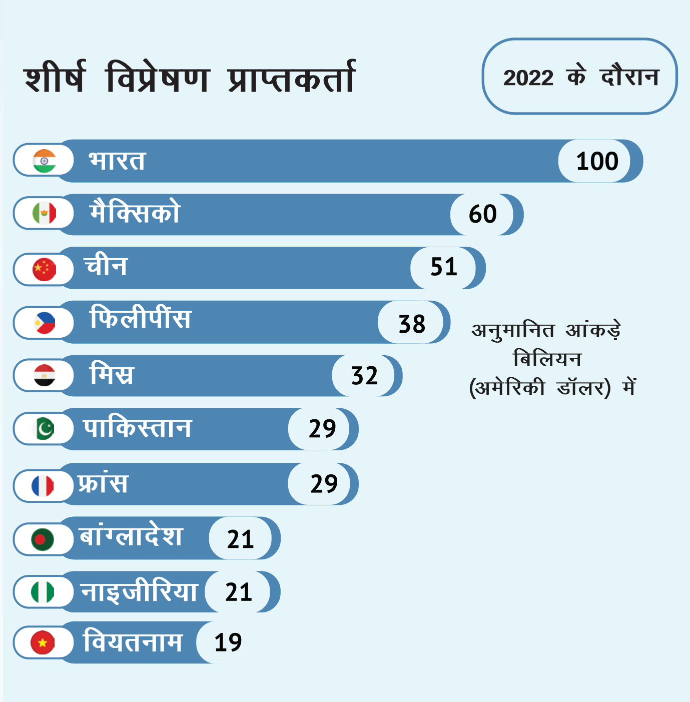

- **भुगतान संतुलन (Balance of Payments):**
  - तेल की कीमतों में वृद्धि के कारण **चालू खाता घाटा (CAD) बढ़ गया है।**
  - पूंजीगत खाते का अधिशेष CAD से कम था, जिसके कारण विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आई है।
- **विदेशी ऋण या बाह्य ऋण (External Debt):** सितंबर, 2022 के अंत तक GDP के अनुपात में विदेशी ऋण 19.2% हो गया है, जो एक वर्ष पहले तक 20.3% के स्तर पर था।
  - निम्नलिखित के मामले में भारत का विदेशी ऋण अपेक्षाकृत कम है:
    - सकल राष्ट्रीय आय के प्रतिशत के रूप में कुल ऋण; एवं,
    - कुल ऋण के प्रतिशत के रूप में अल्पकालिक ऋण।

शब्दावली को जानें

- **मुक्त व्यापार समझौता (Free Trade Agreements: FTA):** यह दो या दो से अधिक देशों के बीच वस्तुओं और सेवाओं के आयात और निर्यात संबंधी बाधाओं को कम करने या उन्हें समाप्त करने के लिए किया जाने वाला समझौता है। इसके तहत वस्तुओं और सेवाओं को संबंधित देशों के मध्य बहुत कम या बिना किसी सरकारी टैरिफ के साथ–साथ कोटा, सब्सिडी या उनके विनिमय को बाधित करने वाले प्रतिबंधों के बिना खरीदा और बेचा जा सकता है। इसके तहत निवेशकों के निवेश और बौद्धिक संपदा अधिकारों के लिए सुरक्षा प्रदान की जाती है।
- **प्रेषण (Remittance):** सरल शब्दों में कहें तो विदेशों में रह रहे लोगों द्वारा अपने मूल देश में अपने परिवार वालों को भेजे जाने वाले धन को विप्रेषण कहते हैं। इसे इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से भी भेजा जा सकता है।
- **चालू खाता घाटा (Current Account Deficit: CAD):** यह दूसरे देशों को बेचे गए उत्पाद से प्राप्त धन और अन्य देशों से वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदने के लिए खर्च किए गए धन के बीच का अंतर है।
- **सरकारी ऋण–GDP अनुपात:** यह ळक्ल के प्रतिशत के रूप में सरकार के सकल ऋण को दर्शाता है। यह सरकारी वित्त की स्थिरता के लिए एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

- **व्यापार में वृद्धि और विविधता:**
  - वर्ष 2022 में, भारत ने **ऑस्ट्रेलिया एवं संयुक्त अरब अमीरात** के साथ क्रमशः **आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौते (Economic Cooperation and Trade Agreement: ECTA) तथा व्यापक आर्थिक सहयोग समझौते (Comprehensive Economic Cooperation Agreement: CECA)** पर हस्ताक्षर किए हैं।
  - भारत ने अपने निर्यात बाजारों का विविधीकरण किया है। भारत ने **ब्राजील, दक्षिण अफ्रीका और सऊदी अरब** में अपने निर्यात को बढ़ाया है।

अध्याय 12: भौतिक और डिजिटल आधारभूत संरचना: संभावित विकास को प्रोत्साहन (Physical and Digital Infrastructure: Lifting Potential Growth)

आधारभूत संरचना के विकास के लिए सरकार का दृष्टिकोण: भौतिक–सार्वजनिक आधारभूत संरचना

- **IIPDF (सार्वजनिक–निजी भागीदारी: भारत अवसंरचना परियोजना विकास निधि/India Infrastructure Project Development Fund Scheme)** योजना को 2022 में लॉन्च किया गया है। वित्त वर्ष 2022–23 से 2024–25 की तीन वर्ष की अवधि के लिए IIPDF का कुल परिव्यय 150 करोड़ रुपये है।
- **राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (National Infrastructure Pipeline: NIP): NIP और परियोजना निगरानी समूह (Project Monitoring Group: PMG)** पोर्टल को आपस में जोड़ने से परियोजनाओं के लिए अनुमोदन/ मंजूरी में तेजी आई है।
- **राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन (National Monetisation Pipeline):** इसके तहत वित्त वर्ष 2022–23 के लिए 1.6 लाख करोड़ रुपये (9.0 लाख करोड़ के कुल NMP लक्ष्य का 27%) के लक्ष्य की परिकल्पना की गई है।
- **गतिशक्ति:** पी.एम. गतिशक्ति नेशनल मास्टर प्लान, सभी मंत्रालयों/ विभागों में एकीकृत योजना और तालमेल आधारित कार्यान्वयन के लिए व्यापक डेटाबेस तैयार करता है।
- **विद्युत क्षेत्रक और नवीकरणीय ऊर्जा:** सितंबर 2022 तक, केंद्र सरकार द्वारा 16 राज्यों में 59 सोलर पार्क (40GW के बराबर) स्वीकृत किए जा चुके हैं।
  - उद्योगों में स्थापित 1 मेगावाट और उससे अधिक के कैप्टिव पॉवर प्लांट सहित कुल स्थापित विद्युत क्षमता **31 मार्च 2022 में बढ़कर 482.2 GW हो गई है।** यह 31 मार्च 2021 को 460.7 GW थी।
- **भारतीय लॉजिस्टिक्स को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाना:**
  - **राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति** ने समावेशी विकास को गति प्रदान की है।
  - राष्ट्रीय राजमार्गों (NHs)/सड़कों के निर्माण में तीव्र वृद्धि दर्ज की गई है। वित्त वर्ष 2015–16 में 6061 कि.मी. की तुलना में **वित्त वर्ष 2021–22 में 10,457 कि.मी. लंबे राष्ट्रीय राजमार्गों/सड़कों का निर्माण हुआ है।**
  - प्रमुख बंदरगाहों की क्षमता 8 वर्षों में लगभग दोगुनी हो गई है।

डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना : औपचारीकरण और वित्तीय समावेशन

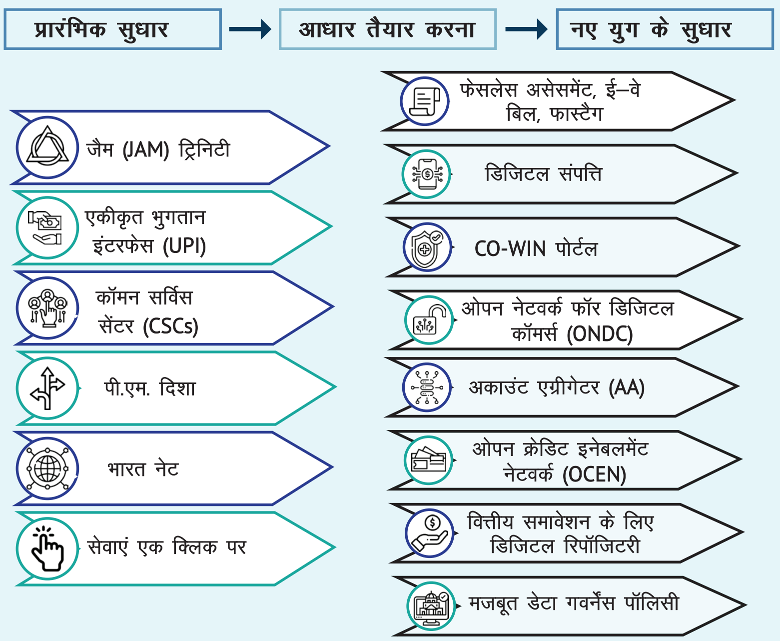

भारत की डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (India's Digital Public Infrastructure)

- **वर्ष 2019–22 के बीच UPI-आधारित लेनदेन में मूल्य (Value) के संदर्भ में 121% और मात्रा (Volume) के संदर्भ में 115% की वृद्धि दर्ज की गई है।**
- वर्ष 2022 के मार्च में **भारत में समग्र टेली–घनत्व (Overall tele-density) 84.8% था।** भारत में 2015 से 2021 के बीच ग्रामीण इंटरनेट ग्राहकों में 200% की वृद्धि हुई है।
- **अकाउंट एग्रीगेटर एक सहमति–आधारित डेटा साझाकरण फ्रेमवर्क है।** वर्तमान में यह फ्रेमवर्क 110 करोड़ से अधिक बैंक खातों में कार्यरत है।

शब्दावली को जानें

- **डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना:** यह सार्वजनिक और निजी सेवा वितरण {जैसे– पहचान–पत्र (ID), भुगतान और डेटा विनिमय प्रणाली तथा ई–गवर्नेंस} के लिए आवश्यक बुनियादी कार्यों को सक्षम बनाने वाले डिजिटल समाधानों को संदर्भित करता है।
- **डिजिटल सार्वजनिक सुविधाएं:** ये देश में डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना (DPI) को संचालित करने के लिए उपयोग किए जाने वाले ओपन–सोर्स सॉफ्टवेयर, मॉडल्स और मानकों के प्रकार हैं। DPI में भुगतान और डेटा विनिमय प्रणाली आदि शामिल हैं।
- **अकाउंट एग्रीगेटर (AA):** अकाउंट एग्रीगेटर (AA) एक वैश्विक तकनीकी–कानूनी फ्रेमवर्क है। यह व्यक्तियों को अपनी पसंद के किसी भी विनियमित तीसरे पक्ष के वित्तीय संस्थान के साथ अपनी सहमति से अपने वित्तीय डेटा को तीव्र और सुरक्षित रूप से साझा करने में सक्षम बनाता है।